Total number of printed pages–8

1 (Sem–1) HIN

2023

HINDI

Paper : HIN 0100104

(Hindi Sampreshan)

(हिन्दी संप्रेषण)

Full Marks : 60

Time : $2^1/_2$ hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

   (क) 'आ' ध्वनि के उच्चारण में मुख-विवर के भीतर जीभ किस स्थिति में होती है?

   (ख) 'प' ध्वनि का उच्चारण किन दो उच्चारण-अवयवों के स्पर्श से होता है?

   (ग) 'अभिवादन' शब्द का एक पर्यायवाची शब्द बताइए।

   (घ) अभिवादन के रूप में 'प्रणाम' शब्द का प्रयोग किस स्थिति में होता है?

Contd.

(ङ) पारिवारिक पत्र-लेखन के सन्दर्भ में अभिवादन के रूप में 'शुभ आशीर्वाद!' किस स्थिति में लिखा जाता है?

(च) अपनी माताजी को पत्र लिखते समय 'पूज्या माताजी' के रूप में संबोधिन करना सही होगा या गलत?

(छ) 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का अर्थ क्या है?

(ज) 'ऊँची दुकान फीके पकवान' लोकोक्ति का प्रयोग किस अर्थ में होता है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं छः*** के उत्तर अत्यन्त संक्षेप में दीजिए : $2 \times 6 = 12$

(क) 'संप्रेषण' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

(ख) शब्द के आरंभ में (अकेले और व्यंजन ध्वनि के साथ) आनेवाली 'अ' ध्वनि की औच्चारणिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(ग) उच्चारण-स्थान और उच्चारण के प्रयत्न की दृष्टियों से 'च' ध्वनि की विशेशताओं पर प्रकाश डालिए।

(घ) किसी बुजुर्ग अपरिचित व्यक्ति से भेंट होने पर अपना परिचय किस प्रकार दिया जाता है—उपका एक लिखित नमूना प्रस्तुत कीजिए।

(ङ) सब्जीवाले के साथ बातचीत का एक लिखित उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

(च) पारिवारिक पत्र किसे कहते हैं?

(छ) सम्पादक के नाम पर पत्र लिखते समय संबोधन और स्वनिर्देश के रूप में क्या-क्या लिखे जाते हैं?

(ज) 'अंधे की लकड़ी' और 'आस्तीन का साँप'–इन दो मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(झ) 'आँख' पर बने किन्हीं चार मुहावरों का अर्थ-सहित उल्लेख कीजिए।

(ञ) 'एक पंथ दो काज'–इस लोकोक्ति का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं चार*** के उत्तर संक्षेप में दीजिए : $5 \times 4 = 20$

(क) संप्रेषण के अलग-अलग प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

(ख) उच्चारण-स्थान और उच्चारण के प्रयत्नों की दृष्टियों से 'श', 'ष' और 'स' ध्वनियों की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

(ग) 'मोबाइल फोन के सदुपयोग' विषय पर तीन मित्रों की मण्डली में होनेवाले वार्तालाप का एक नमूना प्रस्तुत कीजिए।

(घ) अपने नाम पर एक बचत बैंक खाता खोलने के सन्दर्भ में बैंक-अधिकारी के साथ होनेवाली बातचीत का एक नमूना तैयार कीजिए।

(ङ) जनता हाईस्कुल, जालुकबारी, गुवाहाटी-14 में रिक्त पड़े कंप्युटर ऑपरेटर के पद के लिए प्रधानाध्यापक के नाम पर एक आवेदन-पत्र प्रस्तुत कीजिए।

(च) पुस्तक खरीदने हेतु एक हजार रूपये मँगाते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए।

(छ) अर्थ लिखकर निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

कागजी घोड़े दौड़ाना, खुन-पसीना एक करना, घोड़े बेचकर सोना, जमीन पर पैर न पड़ना, नौ-दो ग्यारह होना

(ज) उपयुक्त शीर्षक देकर निम्नलिखित गद्यांश का एक-तिहाई में संक्षेपण कीजिए :

"मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनन्द-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को

सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि इसमें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दुसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से जो सुख होता है, वह अत्यन्त क्षणिक होता है; क्योंकि तुरन्त ही दुसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते हैं। यह आनन्द जीवन का आनन्द है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भुल कर केवल मनुष्यत्व का खयाल करते है। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भुल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, सच्छन्दता आ जाती है। उस रोज हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घुमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हमलोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हमलोग सच्चा आनन्द पा रहे हैं।"

Contd.

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं दो*** के सम्यक उत्तर दीजिए : 10×2=20

(क) भाषा एवं संप्रेषण के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालते हुए संप्रेषण की उपयोगिता को रेखांकित कीजिए।

(ख) 'साक्षात्कार का सामना कैसे करें'-इस बात को ध्यान में रखते हुए हाइस्कुल के सहकारी शिक्षक के पद हेतु अध्यक्ष-सहित तीन सदस्यीय इंटरव्यु बोर्ड के समक्ष उम्मीदवार कखग के साक्षात्कार का एक नमूना प्रस्तुत कीजिए।

(ग) निम्नलिखित विषयों में से ***किसी एक*** पर निबन्ध लिखिए :

(अ) अपने जीवन का लक्ष्य

(आ) सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

(इ) चार बर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की उपयोगिता

(घ) "जो स्त्री देश को तेजस्वी, नीरोग और सुशिक्षित सन्तान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है।"

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के इस कथन का पल्लवन कीजिए।

(ङ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर उसके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

"विद्यार्थी जीवन मानव-जीवन का वह काल है जिस पर उसका भविष्य निर्भर करता है। इस काल में विद्यार्थी को राजनीति का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। अतः उसे राजनैतिक अग्निकुण्ड में नहीं कुदना चाहिए तथा उसे अपने भविष्य का प्रतिक्षण ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थी को तो अर्जुन के समान चिड़िया के नेत्र-रूपी विद्या को ही लक्ष्य बनाना चाहिए। उसमें प्रति पल ज्ञानार्जन की ही धुन होनी चाहिए। परन्तु कुछ लोगों का विचार है कि विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के साथ-साथ राजनीति में भी भाग लेना चाहिए। जब कभी राष्ट्रीय गौरव अथवा स्वाभिमान खतरे में पड़ जाता है तथा राष्ट्र के नागरिकों का साधारण जीवन दुभर हो जाता है, उस समय विद्यार्थियों को अपना दायित्व निभाते हुए, साहस का प्रदर्शन करना चाहिए। अतः विद्यार्थी को समय पड़ने पर केवल सीमित रूप में ही राजनीति में भाग लेना चाहिए। परन्तु उसे सक्रिय राजनीति से दुर रहना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी के राजनीति में भाग लेने से वह अध्ययन के प्रति उदासीन हो जाता है। वह पथभ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ने लगता है। संक्षेप में इस कह सकते हैं

Contd.

कि जीवन की सफलता के लिए बौद्धिक तथा राजनैतिक सचेतना का विकास विद्यार्थी को अपने अन्दर अवश्य करना चाहिए।"

प्रश्नावली : $2 \times 5 = 10$

(अ) मानव का भविष्य उसके विद्यार्थी जीवन पर किस प्रकार से निर्भर करता है?

(आ) विद्यार्थी को क्यों राजनैतिक अग्निकुण्ड में कुदना नहीं चाहिए?

(इ) "विद्यार्थी को तो अर्जुन के समान चिड़िया के नेत्र रूपी विद्या को ही लक्ष्य बनाना चाहिए।"

इस पंक्ति का आशय क्या है?

(ई) विद्यार्थी को किन स्थितियों में सीमित रूप में ही राजनीति में भाग लेना चाहिए?

(उ) विद्यार्थी जीवन में सक्रिय राजनीति में भाग लेने का क्या परिणाम निकल सकता है?